नौटंकी शैली में रामायण लिखने वाले राधेश्याम कथावाचक

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

नौटंकी की शैली में लिखी गई रामायण ऐसी अनोखी कृति थी जिसने राधेश्याम कथावाचक को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचा दिया, इस कृति का नाम भी उनके नाम पर राधेश्याम रामायण पड़ा। अपने जीवनकाल में राधेश्याम कथावाचक ने न सिर्फ तमाम नाटक लिखे, बल्कि कई फिल्मों की पटकथा लिखने के साथ गीतों की रचना की। हालांकि सबसे ज्यादा ख्याति उन्हें राधेश्याम रामायण से ही मिली। रामलीला के मंचों पर आज भी उनकी गायन शैली का प्रयोग किया जाता है। इस रामायण की विशेषता यह है कि राधेश्याम कथावाचक ने इसमें संवाद और अभिनय पक्ष को भी जोड़ा। इस कारण इसके संवाद मंचों पर की जाने वाली रामलीला में अपनाए गए। इस रामायण के मंचनीय होने के साथ संवाद और गायन गुण भी है। आज घर-घर में राधेश्याम रामायण है।

नाटकों को राष्ट्रीय भावनाओं से जोड़ा

राधेश्याम का पेशा कथावाचन का था, नाटक उनका शौक था। लोगों के बीच उनके नाटक बेहद लोकप्रिय थे। उनके वीर अभिमन्यु नाटक को सबसे ज्यादा प्रसिद्ध मिली, जिसका देशभर के स्कूल- कॉलेजों, थिएटर, मंचों पर डेढ़ हजार से अधिक बार मंचन किया जा चुका है। आज भी इस नाटक का मंचन होता है। राधेश्याम ने अपने नाटकों को राष्ट्रीय भावनाओं से भी जोड़ा, जिसमें अछूत उद्धार और समाज सुधार की प्रमुखता थी। उन्होंने करीब 14 नाटक लिखे। जिसमें श्रवणकुमार, परिवर्तन, मशरिकी हूर, नारद मोह, महर्षि वाल्मीकि आदि सम्मिलित हैं। जिस समय राधेश्याम ने इस क्षेत्र में कदम रखा, उस समय पारसी रंगमंच का प्रभाव था। उन्होंने भारतीय पौराणिक आख्यानों को लेकर नाटकों की रचना की। नाटकों को नई दिशा दी।

राधेश्याम कथावाचक का जन्म 25 नवंबर 1890 में शहर के मोहल्ला बिहारीपुर में हुआ था। राधेश्याम कथावाचक पर शोध कर कई किताबें लिखने वाले कृष्णायन कॉलोनी डेलापीर निवासी हरिशंकर शर्मा बताते हैं कि नौटंकी शैली राधेश्याम रामायण की सबसे बड़ी विशेषता है। उदाहरण के तौर पर पंचवटी के प्रसंग में उन्होंने लिखा है- 'मेरी नाक गई सो गई, अब अपनी नाक संभालो तुम, यदि जग में ऊंची नाक नहीं तो नकटा नाम धरा लो तुम', उन्होंने इसी लोक छंद के आधार पर अपनी रामायण की रचना की है, जो आगे चलकर तर्ज राधेश्याम या राधेश्यामी छंद के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन छंदों को उनके नाम से जाना गया, जो उनकी बड़ी उपलब्धि थी। हरिशंकर शर्मा कहते हैं, पंडित जी लोक व्यक्ति थे, उस वक्त नौटंकी (स्वांग), रामलीला, रास, आला गायकी, लोक गीत का चलन था। सबसे ज्यादा उत्तर भारत में आल्हा गाई जाती थी, राधेश्याम रामायण इतनी प्रसिद्ध हुई कि वह सावन के दिनों में गांवों की चौपाल और शहरी इलाकों में गाकर सुनाई जाती थी। हरिशंकर बताते हैं कि पांच साल पहले उनकी मुलाकात जैसलमेर के एक बुजुर्ग सज्जन से हुई थी, वह उन्हें जयपुर में मीरा महोत्सव में मिले थे। उन्होंने पंडित जी से जुड़ा एक वाकया सुनाया। बताया कि पंडित जी यहां कथा सुनाते थे, उनका खेतों में बड़ा सा मंच के रूप में मचान बनता था। पंडितजी ने पूर्व दिशा से रामायण की शुरुआत की थी, उनके चारों ओर श्रोता बैठे थे, उन्होंने रामायण के विभिन्न प्रसंग पूर्व, पश्चिमी और दक्षिण दिशा की ओर अपना आसन करके सुनाए, वहां पर 50 से हजार से ज्यादा श्रोता थे। वहां कोई माइक नहीं था, उन्होंने अपने कंठ से रामायण सुनाई, उनकी आवाज आखिर में बैठे व्यक्ति तक पहुंचती थी। वर्ष 1930 में बरेली के साहूकारा स्थित दाऊ जी मंदिर में वहां के एक संगीतज्ञ नारायण गोस्वामी थे, जिन्होंने राधेश्याम कथावाचक की रामायण को संगीतमय गायन ग्रामोफोन रिकार्ड के लिया किया था। जिसके रिकार्ड एचएमबी व अन्य कंपनियों ने रिकार्ड जारी किए थे।

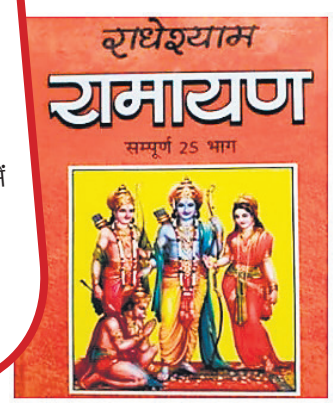

25 कथा खंड और आठ भाग में है राधेश्याम रामायण

राधेश्याम रामायण 25 कथा कांड और आठ भाग में है। मोहल्ला बिहारीपुर में वर्ष 1920 में राधेश्याम प्रेस की स्थापना हुई थी। इससे पहले उनकी रामायण आगरा, मुरादाबाद, लखनऊ और मथुरा से प्रकाशित होती थी। छोटे कथा खंड यहीं से प्रकाशित होते थे। उनका गायन, ढोलक और हारमोनियम पर होता था। वह खुद हारमोनियम बजाते थे। राधेश्याम रामायण संस्कृत और उर्दू मिश्रित खड़ी बोली में है। जिसमें मुहावरे, लोकयुक्तियों का प्रयोग किया गया, जो बहुत सरल है, जिसे लोग आसानी से समझ जाते हैं, जिन्हें उन्हें छंद का अर्थ बताने की जरूरत नहीं पड़ती है। यही वजह है कि यह बहुत जल्दी घर-घर तक पहुंच गई। राधेश्याम के पिता बांकेलाल शर्मा कथावाचक थे, वह भी चाहते थे कि बेटा उन्हीं की तरह कथावाचक बने। राधेश्याम ने 17-18 वर्ष की अवस्था में ही रामायण के कथा खंडों को लिख डाला था।

राधेश्याम कथावाचक का फिल्मी सफर

राधेश्याम कथावाचक ने 1931 में फिल्म शकुंतला के संवाद और कहानी लिखी थी। श्री सत्यनारायण फिल्म की कहानी के साथ गीतों को भी लिखा। फिल्म झांसी की रानी लक्ष्मीबाई में लिखे उनके गीत को मोहम्मद रफी ने गाया था। उनकी फिल्में काफी सफल रहीं। 26 अगस्त 1963 में उनका देहांत हो गया।

राधेश्याम पर लिखी किताबें

'सनातन के प्रहरी पं. राधेश्याम कथावाचक' किताब के लेखक हरिशंकर शर्मा कहते हैं कि पंडितजी ने राधेश्याम रामायण को सरल रूप में प्रस्तुत किया। उनके द्वारा संपादित पुस्तक राधेश्याम कथावाचक की डायरी 'अपने समय का सच' महाराष्ट्र विवि से संबद्ध महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल है। गुरुकुल कांगड़ी विवि के आर्काइव में उनकी दो किताबें 'रंगायन' और 'राधेश्याम कथा वाचक : सफर एक सदी' है।

कथावाचक राधेश्याम का हारमोनियम

विंडरमेयर : रंगमंच की सिखा रहा बारीकियां

शहर के सिविल लाइंस में स्थापित विंडरमेयर रंगमंच की दिशा में लगातार कुछ न कुछ नया कर रहा है। न सिर्फ लोगों को रंगमंच के करीब ला रहा है बल्कि बरेली की छिपी प्रतिभाओं को निकालने और उन्हें मंच देने का भी काम कर रहा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रंगमंच के मझे हुए कलाकारों के जरिये नई पौध को अभिनय की बारीकियों से सींचने काम कर रहा है।

विंडरमेयर नाम के ब्लैक बॉक्स थिएटर की स्थापना शहर के जाने माने चिकित्सक डॉ. बृजेश्वर सिंह ने वर्ष 2013 में की थी। रंग विनायक रंगमंडल समूह का गठन वर्ष 2007 में हुआ था। करीब 12 सालों से बरेली के लोगों को यह थिएटर रंगमंचीय दुनिया से रूबरू करा रहा है। यहां राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तमाम नाटकों का मंचन हो चुका है और यह क्रम लगातार जारी है। रंगमंच के दिग्गज कलाकार, लेखक, नाटककार मानव कौल, रोहिणी हट्टंगड़ी, कुमुद मिश्रा, अश्वथ भट्ट, मकरंद देशपांडे, कुलभूषण खरबंदा, सुमित व्यास यहां मंचन कर चुके हैं। इस वक्त यहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर की वर्कशॉप चल रही है, जिसमें जर्मन रंगमंच के कलाकार माटेन युवा कलाकारों को रंगमंचीय कौशल सीखाने के साथ उसकी बारीकियां बता रहे हैं। साथ ही मॉर्डन, पोस्ट मॉर्डन और एक्सिस थिएटर के बारे में भी अहम जानकारी दे रहे हैं। एक्सिस थिएटर में कई चीजों के माध्यम से दर्शकों से संवाद किया जाता है।

रंग विनायक रंग मंडल टीम के सदस्य एवं रंगमंच के कलाकार पुराना शहर के सैलानी निवासी दानिश खान बताते हैं कि रंग विनायक रंग मंडल की टीम रामलीला का मंचन करती है। अभी हाल में इस टीम ने अयोध्या में आयोजित दीपोत्सव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में मंचन किया था। रामलीला में श्रीराम का किरदार निभाने वाले दानिश बताते हैं कि मुख्यमंत्री ने उनकी टीम के रामलीला मंचन के कुछ अंश पोर्टल पर भी जारी किए थे। वह बताते हैं कि जो कलाकार नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में नहीं जा पाते हैं। विंडरमेयर की कोशिश रहती है, वहां के शिक्षकों के जरिये यहां के युवा कलाकारों को प्रशिक्षित किया जाए। यहां से जुड़े कई लोग टीवी, फिल्म और डायरेक्शन में अपना हुनर दिखा रहे हैं, इनमें कौशल मिश्रा, शिवा, सृष्टि माहेश्वरी, सविता, वर्षा जैसे तमाम नाम हैं। टीम में करीब 18 कलाकार हैं। बताया कि नवरात्र के समय विंडरमेयर में रामलीला का मंचन होता है।

विंडरमेयर को स्थापित करने वाले और दया दृष्टि चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. बृजेश्वर सिंह को रंगमंच से गहरा लगाव है। यही वजह कि वह डॉक्टरी पेशा के साथ इस विधा सी भी जुड़े हैं। लोगों को भी इससे जोड़कर रखना चाहते हैं। उन्हें रंगमंच-कला-संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ष 2020 के रंगमंच प्रोत्साहन के लिए उन्हें प्रतिष्ठित यूपीएसएनए (उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ऐसे कई प्रदेशों से उन्हें सम्मान मिल चुके हैं।

संगीत और रंगमंच के क्षेत्र में बरेली की एक गहरी और बहुआयामी विरासत है। बरेली की यह कलात्मक पहचान पारंपरिक कला विधाओं और आधुनिक अभिव्यक्तियों के एक अनूठे संगम का प्रमाण है, जो शहर के सांस्कृतिक ताने-बाने को निरंतर समृद्ध कर रही है। इतिहास की गूंज वर्तमान की आवाज़ के साथ मिलकर यहां का संगीत और रंगमंच एक अनूठी और जीवंत सांस्कृतिक पहचान बना रहा है। यह शहर इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे पारंपरिक कला विधाएं आधुनिक अभिव्यक्तियों के साथ मिलकर किसी क्षेत्र की कलात्मक पहचान को न केवल जीवित रखती हैं, बल्कि उसे निरंतर समृद्ध भी करती हैं।

मील के पत्थर

बरेली नाट्य महोत्सव में जुटे थे रंगमंच के दिग्गज

बरेली शहर में रंगमंच को आगे बढ़ाने के लिए अस्तिता फाउंडेशन की ड्रामा ड्रॉप आउट्स विंग भी काम कर रही है। इसके चेयरमैन एवं रंगमंच कलाकार कैंट स्टेशन रोड निवासी राजू सिंह चौहान बताते हैं कि दो जनवरी वर्ष 2025 में इस संगठन का गठन किया गया। जो किसी कारण कलाकार रंगमंच से छूट गए हैं, उन्हें जोड़ने का भी काम ड्रामा ड्रॉप आउट्स विंग कर रहा है। हम सभी कलाकारों का काम थियेटर को आगे बढ़ाना है। वर्तमान में इस संगठन से 35 कलाकार जुड़े हैं। संस्था की ओर से अर्बन हॉट स्थित प्रभावे में एक से सात सितंबर तक बरेली नाट्सय महोत्सव का आयोजन हुआ था। जिसमें रंगमंच के दिग्गज कलाकार जुटे थे। इसमें मेटा-पंचलाट समेत कई नाटकों का मंचन हुआ था। बड़ी संख्या में दर्शकों ने पहुंचकर कलाकारों के अभिनय को सराहा था। गोरखपुर, दिल्ली के श्रीराम सेंटर आदि स्थानों से रंगमंच के कलाकारों की टीमें आई थीं। इससे पहले मोहन राकेश के नाटक आषढ़ का एक दिन का मंचन हुआ था। अभिनेता सौरभ शुक्ला ने नाटक बर्फ का मंचन किया था। राजू बताते हैं कि दिसंबर में भी पांच नाटकों का मंचन किया जाएगा। बरेली नाट्य महोत्सव भी हर साल होगा।

चेयरमैन एवं रंगमंच कलाकार राजू सिंह चौहान

कला-संस्कृति की विरासत को संजो रहा रिद्धिमा

एसआरएमएस ट्रस्ट ने 8 फरवरी 2021 को अपने प्रेरणा स्रोत स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय राम मूर्ति के 111वें जन्मदिन पर रिद्धिमा ए सेंटर आफ परफार्मिंग एंड फाइन आर्टस को म्यूजिक संस्थान के रूप में स्थापित किया था। कथक गुरु जितेंद्र महाराज, शायर वसीम बरेलवी और शब्बू मियां की मौजूदगी में इसका लोकार्पण हुआ था। हाजियापुर स्थित रिद्धिमा में गायन, वादन, फाइन आर्ट्स, कथक, भरतनाट्यम और अभिनय की शिक्षा दी जा रही है। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति ने सांस्कृतिक धरोहर और कला को संरक्षण देने का जो संकल्प लिया। इसी का नतीजा रहा कि स्थापना से ही रिद्धिमा ने संगीत और थिएटर प्रेमियों पर अपना जादू बिखेरना शुरू कर दिया था। रिद्धिमा ने कला को सहेजने का काम तो किया ही कलाकारों को अपना हुनर दिखाने के लिए मंच भी समर्पित किया। यही वजह रही कि यहां सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन अनवरत रूप से जारी है। प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जा रही हैं। यहां पर थिएटर प्रेमियों के लिए वर्ष 2021 में मार्च में जिंदगी डॉट काम से नाटक के मंचन का आगाज हुआ। इसके बाद नाटकों के मंचन का सिलसिला प्रति सप्ताह पहुंच गया। यहां पर पं.राधेश्याम कथावाचक के चर्चित नाटक वीर अभिमन्यु, अंधायुग, पोस्टर, प्रमोशन, अकबर द ग्रेट ने गुदगुदाया, दयाशंकर की डायरी, गालिब इन न्यू दिल्ली, अर्जुन प्रतिज्ञा, अंधायुग, पैगाम ए खुसरो, त्रिशंकु, टुकड़े टुकड़े धूप, वरदान, मैं पापिन क्यों, चाचा छक्कन इन एक्शन जैसे 150 से ज्यादा नाटकों का मंचन किया जा चुका है। स्थापना वर्ष से ही रिद्धिमा में थिएटर फेस्टिवल इंद्रधनुष का भी आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सप्ताह में सात प्रसिद्ध नाटकों का मंचन होता है। इसके साथ ही फाग महोत्सव, सूफियाना कव्वाली, बज्म ए सुखन और साहित्य सरिता कार्यक्रम से रिद्धिमा के श्रोताओं को बरेली और आसपास के नवोदित शायरों और कवियों से रूबरू होने का मौका दिया जा रहा है। चित्रकला के प्रति विद्यार्थियों का रुझान बढ़ाने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए रिद्धिमा में वार्षिक राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिताएं भी आयोजित होती हैं। इसके साथ ही नृत्य कला, फोटोग्राफी और थिएटर टेक्निक्स के लिए भी वर्कशाप का आयोजन अनवरत किया जाता है।

दुर्लभ वाद्य यंत्रों की विरासत

श्रीराम मूर्ति स्मारक रिद्धिमा में इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम स्थापित किया गया है, जिसमें दुर्लभ वाद्ययंत्रों को संरक्षित करने की पहल की गई है। इसमें दो सौ से ज्यादा दुर्लभ वाद्य यंत्रों को देश के कोने कोने से लाकर यहां रखा गया। यह देश का ऐसा अनोखा इकलौता इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम है, जहां पर इतनी बड़ी संख्या में वाद्ययंत्रों एक साथ संरक्षित किया गया है। संगीत प्रेमियों और युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली संगीत इतिहास के इन दुर्लभ वाद्य यंत्रों से परिचित कराने और सहेजने के लिए ही यहां संग्रहालय बनाया गया। वर्ष 2021 में तीन सितंबर को एसआरएमएस ट्रस्ट के सेक्रेटरी आदित्य मूर्ति ने वाद्य यंत्र संग्रहालय का शुभारंभ किया था। आदित्य मूर्ति के अनुसार हमारे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विश्व भर में धूम है। सभी देशों में हमारे वाद्य यंत्रों को सराहा जाता है। ट्रस्ट के चेयरमैन एवं पिता देव मूर्ति ने इन्हें संरक्षित करने का संकल्प लिया और रिद्धिमा में इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम स्थापित किया। यहां जोगी सारंगी, रावण हत्था, गुलगुबा, अलगोजा, एकतारा जैसे फोक वाद्ययंत्र के साथ ही विचित्र वीणा, रुद्र वीणा, सरस्वती वीणा, मयूरी वीणा, सुरबहार, दिलरुबा, पखावज, मृदंग, गोपीचंद, कश्मीरी सारंगी, संतूर, सारिंदा जैसे शास्त्रीय वाद्ययंत्र भी रखे गए हैं।

प्रस्तुति : रामराज मिश्रा